

Date  
28/04/2020

Pedagogy of Mathematics

B.Ed. Ist Year

Topic - पाठ्यक्रम

Period - V<sup>th</sup>

पाठ्यक्रम का विकास ⇒

लोरीव के गणित परिषद तथा गणित अध्यापकों के राष्ट्रीय परिषद ने सन 1933 में गणित का शिक्षा में स्थान का अध्ययन करने के लिये तथा गणित के पाठ्यक्रम का निर्माण करने के लिये एक आयोग का गठन किया गया। आयोग को गणित के प्रचलित पाठ्यक्रमों में लचीलापन तथा कमबद्धता के अभाव के कारण राष्ट्रीय स्तर पर गणित के पाठ्यक्रम में कोईनाई हुई। आयोग ने निर्धारित किया कि पूर्व माध्यमिक स्तर पर दत्ता को निम्न बातों का ज्ञान होना चाहिये।

- 1 ⇒ किसी अंक का विभिन्न संख्याओं में स्थानीय मान तथा दशमलव प्रणाली का ज्ञान।
- 2 ⇒ जोड़, बर्क, गुणा तथा भाग में संख्या के संचय के क्रियाओं पर अधिकार।
- 3 ⇒ पूर्ण संख्याओं, साधारण भिन्नो तथा दशमलव भिन्नो के प्रक्रियाओं का ज्ञान।
- 4 ⇒ प्रमुख मापन के इकाइयों का ज्ञान।

गणित शिक्षण को वृद्धि के लिये जर्मन सोसाइटी ने गणित का औद्योगिक बनों के पक्ष में अपनी सिफारिश इस प्रकार की है -

“ माध्यमिक कक्षाओं में गणित सामान्य संस्कृति को जांच के लिये होना चाहिये, न कि किसी प्रकार के तकनीकी प्रशिक्षण में योग देन के लिये। इसके द्वारा अवकाश सम्बन्धी सहज ज्ञान, तर्कपूर्ण विचार, उन विचारों को जो ठीक समझे जाते हैं, स्पष्ट भाषा में सुधार व्यक्त करने की शक्ति तथा नैतिक एवं सौन्दर्ययुक्त प्रभाव जोड़ने का विकास होना चाहिये”।

पाठ्यक्रम निर्माण के प्रमुख सिद्धान्त -

पाठ्यक्रम निर्धारण के मुख्य

सिद्धान्तों को व्याख्या निम्न प्रकार है।

- 1 ⇒ बालक को शिक्षण का केंद्र मानना
- 2 ⇒ उपयोगिता का सिद्धान्त
- 3 ⇒ उच्च शिक्षा की आवश्यकता पूर्ति का सिद्धान्त
- 4 ⇒ क्रियाशीलता का सिद्धान्त
- 5 ⇒ अध्यापकों को राय देने का सिद्धान्त

(2)

6 = लचीलेपन का सिद्धान्त

7 = अवकाश के सुरुपयोग का सिद्धान्त

8 = गणित शिक्षण के उद्देश्यों की पूर्ति का सिद्धान्त

9 = सह सम्बन्ध का सिद्धान्त

गणित पाठ्यक्रम में सुधार हेतु कोठारी आयोग के सुझाव =

“ प्राथमिक स्तर पर

इस समय गणित को प्रायः अंकगणित, बीजगणित और रेखागणित

में विभाजित करके पढ़ाया जाता है। इससे संख्या सम्बन्धी

मूलभूत क्रियाओं को त्वर्य में ही पुनरावृत्त होती रहती है।

इसलिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि अंकगणित और बीजगणित

सम्बन्धी पाठ्यक्रमों को एक दूसरे में मिलाकर पढ़ाया जाये और

क्रमबद्ध तर्कपूर्ण ढंग से ज्ञान प्राप्त करने पर जोर दिया जाये।

इस पाठ्यक्रम में संख्या प्रणालियों के विकास, संख्याओं को लिखने

और पढ़ने सम्बन्धी ज्ञान, समीकरण और उपयोगी समस्याओं का

संगोपन होना चाहिए। इसी तरह रेखागणित को पाठ्यसामग्री

को भी अच्छी तरह सोच विचार कर फिर से पुनर्गठन

करना आवश्यक है।

28/04/2020

(3)